अखिल भारतीय काव्यधारा

रामपुर, उत्तर प्रदेश

मासिक ई पत्रिका

वर्ष :3 अंक :1-2 माह: जनवरी - फ़रवरी 2020

जितेन्द्र कमल आनंद
प्रधान संपादक

पुष्पा जोशी प्राकाम्य
संयुक्त संपादक

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
जितेन्द्र कमल आनंद

संयुक्त संपादक
पुष्पा जोशी प्राकाम्य

संपादक
राम किशोर वर्मा
डॉ शालिनी शर्मा मुक्ता
रागिनी गर्ग

समीक्षक
छाया सक्सेना 'प्रभु'

चित्रांकन
शोभित

प्रकाशक
आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा
मंगल भवन, साईं मंदिर के पास
साईं विहार कॉलोनी,
रामपुर – 244901, उत्तर प्रदेश
7017711018

अनुक्रमणिका

	सम्पादकीय	5
1	सुबोध कुमार शर्मा शेरकोटी	6
2	डॉ. अरविंद "धवल"	7
3	डॉ शेषपाल सिंह 'शेष'	8
4	जितेन्द्र कमल आनंद	9
5	पुष्पा जोशी प्राकाम्य	10
6	डॉ मीना कौशल	11
7	डॉ ममता सिंह	11
8	विनय साग़र जायसवाल	12
9	कृष्णलता (कृष्णा)	13
10	शैफाली अग्रवाल	14
11	ओंकार सिंह विवेक	15
12	आनन्द वर्धन शर्मा	15
13	डॉ के पी सिंह 'विकलबहराइची'	16
14	डॉ सरला सिंह स्निग्धा	17
15	दीपक तिवारी	17
16	डा० भारती वर्मा बौड़ाई	18
17	डॉ बी. के. चन्द्रसखी	19
18	रवि रश्मि 'अनुभूति '	19
19	कमल सक्सेना	20

20	रागिनी गर्ग	21
21	मीरा भार्गव सुदर्शना	22
22	डॉ0 राकेश सक्सेना	22
23	राम किशोर वर्मा	23
24	पुष्पा शर्मा "कुसुम"	24
25	प्रीति शर्मा	25
26	शशि त्यागी	26
27	सत्य पाल सिंह 'सजग'	27
28	उदय शंकर चौधरी नादान	28
29	सुलोचना परमार "उत्तरांचली"	29
30	लक्ष्मी बड़शिलिया'बीना'	30
31	अनिल कुमार शुक्ल 'अनिल'	31
32	आनंद पाठक	31
33	हरीश बिष्ट	32
34	मोनिका 'मासूम'	33
35	श्री कृष्ण शुक्ल 'कृष्ण'	33
36	छाया सक्सेना ' प्रभु '	34, 36-37
37	डॉक्टर शालिनी शर्मा मुक्ता	34
38	शैली सिंह	35
39	समीक्षा "एक प्रारम्भ"	35
40	राजबाला "धैर्य"	35
	अखिल भारतीय काव्यधारा के रचनाकारों के छायाचित्र	38

सम्पादकीय

आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा, रामपुर (उ प्र) द्वारा समय समय पर काव्यकारों को प्रोत्साहित करने के लिए काव्य संकलन के साथ मासिक ई पत्रिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं. **अखिल भारतीय काव्यधारा मासिक ई पत्रिका** भी उन्ही में से एक प्रयास है. यद्यपि यह तीसरा वर्ष है, तथापि लगभग सात-आठ माह के अन्तराल के बाद यह मासिक ई पत्रिका पुनः आरम्भ की जा रही है.

नय वर्ष का शुभ स्वागत करते हुए हार्दिक शुभकामनाओं सहित रचनाकारों की छंदबद्ध रचनाएँ इसमें संकलित की गई हैं. संस्था के लिए यह गर्व की बात है कि **सुबोध कुमार शर्मा "शेरकोटी"**, **डॉ. अरविंद "धवल"**, **डॉ शेषपाल सिंह "शेष"**, **विनय साग़र जायसवाल**, **ओमकार सिंह विवेक**, **डॉ के पी सिंह "विकलबहराइची"**, **डॉ कमल सक्सेना**, **डॉ राकेश सक्सेना**, **पुष्पाशर्मा "कुसुम"** जैसे वरिष्ठ साहित्यकार हैं जो कि इस पत्रिका में अपने नवनूतन रंग बिखेर रहे हैं.
तो मेरा भी यह कहना है:

"एकता के लिए अग्रसर हो गए,
खुशबुओं को लिए खिल गया जब 'कमल'"

दिनांक: 27-फ़रवरी-2020

जितेन्द्र कमल आनंद
प्रधान संपादक
मंगल भवन, साईं मंदिर के पास
साईं विहार कॉलोनी,
रामपुर – 244901, उत्तर प्रदेश
7017711018

मनहरण घनाक्षरी छंद

बिल को कराया पास
विपक्ष हुआ उदास
देशहित करो अब
ऐसा बन जाइये ।।

देश का बढ़ाया मान
मिला सर्वोच्च सम्मान
जग में भारत मां को
गौरव दिलाया है ।।

चांद पे पहुंचा यान
जगत हुआ हैरान
वैज्ञानिकों में साहस
दे मान बढ़ाया है ।।

बेटा ही बनता बाप
मिटाता सब का ताप
देश - बेटा बनकर
बाप बन पाया है ।

सच को जो ना ही जाने
अपने को सही माने
कहे बुरा जो सबको
मुँह को छिपाइए।।

आतंक हैं पालते जो
झूठ सदा बोलते वो
तुम जग से रो कर
बात ना चलाइये।

राम नाम उर धारो
सदा राम ही पुकारो
शरण में राम की जा
भव तर जाइए।।

मेरा राम।मेटे दुख
दिलावे वो सबसुख
ऐसे राम नाम पर
भरोसा बताइए।।

है असीम राम सत्ता
सभी को है यह पता
भृम उर का निकाल
बाद न चलाइए।।

राम नाम नित जपे
अमृत में मन बसे
मोह माया को विसार
सुखधाम पाइए ।।

सुबोध कुमार शर्मा शेरकोटी
गदरपुर उधम सिंह नगर
उत्तराखंड

आज की गीतिका

बाँट कर जो प्यार का आलोक एकाकी जिया है ।
कँपकपाती लौ लिए सम्वेदना का वो दिया है ।।

अब नहीं दिखते जटायू पवनसुत सुग्रीव अंगद ,
राम हैं जाने कहाँ फिर आज लंका में सिया है ।।

कौन जाने कब कहाँ किसको बनाये वो निवाला,
आदमी में जो छिपा बैठा भयानक भेड़िया है ।।

अब नहीं मिसरों में बाकी है मिलन मनुहार कुछ भी,
आज गुस्से में ग़ज़ल है थरथराता काफिया है ।।

स्वर्ग में रोते "धवल" कबिरा महादेवी निराला,
नृत्य करता मंच पर साहित्य का जब माफिया है।।

डॉ. अरविंद "धवल"
बदायूँ (उ.प्र.), 07017116584

स्वाभिमान [गीत]

स्वार्थ - शत्रु, लालच से कोई,
जीत नहीं पाया।
मन बंधन में बँधा हुआ है,
जकड़ी है काया।

प्राध्यापक - शिक्षक बंधन में।
अभियंता है कंटक - वन में।
फँसे प्रवक्ता, अभिनेता भी,
नेता कल होंगे क्रंदन में।

मधुर स्वाद है राजनीति का,
भयाक्रांत छाया।

अधिवक्ता तर्कों का खोजी।
लोभ - जाल में रोटी - रोजी।
जन-जन का मन रंग बदलता,
लाल - गुलाबी या फीरोजी।

सत्यवाद निर्भय सदैव है,
जंजाली माया।

जिसने तप-श्रम दामन पकड़ा।
डरते जाली मकड़ी-मकड़ा।
उन्नति-मार्ग स्वयं खुल जाता,
नहीं रहा फिर झगड़ा-लफड़ा।

स्वाभिमान ही जीता आखिर,
खल से टकराया।

डॉ शेषपाल सिंह 'शेष'
'वाग्धाम'-11 डी/ ई-36डी,
बालाजी नगर कालोनी,
टुण्डला रोड, आगरा-282006
मोबाइल नं0 - 9411839862

गीतिका

गाँव के पोखर में खिलते कमल
साँसों में पल गयी फिर एक ग़ज़ल
विहंगों का कलरव गिरता तुषार
पत्तों पे ढल गयी फिर एक ग़ज़ल
वट तले मंदिर में ढोलक के साथ
छंदों में चल गयी फिर एक ग़ज़ल
सर्पीली लहराती कच्ची पथ-डोर
पथिकों को छल गयी फिर एक ग़ज़ल
महक उठी अमराई, फूलों के साथ
भँवरों को फल गयी फिर एक ग़ज़ल

(2122/2122/2122/212=26 मात्रा-भार)
आदमी से आदमी क्या हो गया है आदमी ।
जागता ये क्यों नहीं,क्यों सो गया है आदमी।।1।।
खाइयाँ इतनी बढ़ीं क्यों फासला इतना बढ़ा।
क्यों कुबेरों सम धनिक से रो गया है आदमी।।2।।
रँग गया क्यों पश्चिमी धुन सभ्यता में नाचता ।
जाम पर वो जाम पी क्यों खो गया है आदमी।।3।।
प्यार से ही प्यार के तो बीज बोना चाहिए ।
नफरतों के बीज क्योंकर बो गया है आदमी।।4।।
यह कमल कहता सही ही काम कुछ तो नेक कर ।
वापस कभी आया नहीं है,जो गया है आदमी।। 5।।

जितेन्द्र कमल आनंद
रामपुर उ प्र भारत

श्रीकृष्णा

भव सागर पार करा देना,
हमको मनमोहन गिरधारी!
हम तेरी शरण में हैं कृष्णा!
तेरे चरणों पे बलिहारी।
हमने तो सुना है श्रीकृष्णा!
तुमने ही चीर बढ़ायी थी।
उस भरी सभा में द्रौपदी की,
तुमने ही लाज बचायी थी।
हमको भी पार लगा देना,
जब हम संकट में हों भारी।
हम तेरी शरण में हैं कृष्णा!
तेरे चरणों पे बलिहारी।
विष का प्याला जब राणा ने,
मीरा के लिए था भिजवाया।
दर्शन देकर के मीरा को,
विष का अमृत था करवाया ।
इस दयादृष्टि के श्रीकृष्णा!
हम सब भी तो हैं अधिकारी।
हम तेरी शरण में हैं कृष्णा!
तेरे चरणों पे बलिहारी।
भव सागर पार करा देना,
हमको मनमोहन गिरधारी!
हिरणाकष्यप ने खम्भे से,
प्रह्लाद को जब बंधवाया था।
तब प्रकट हुए नरसिंह बनकर,
प्रह्लाद को आन बचाया था।
भक्तों के कष्ट मिटाने को,
था मार दिया अत्याचारी।
हम तेरी शरण में हैं कृष्णा!
तेरे चरणों पे बलिहारी।
भव सागर पार करा देना,
हमको मनमोहन गिरधारी!
हम तेरी शरण में हैं कृष्णा!
तेरे चरणों पे बलिहारी।

पुष्पा जोशी प्राकाम्य
शक्तिफार्म, सितारगंज,
ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

मुखिया ही सब झेलता, गृहजन के सब ताप।
सदा कष्ट देता स्वयं, पीड़ित होता आप।।
संचालन सबका करे, संचालक बन मीत।
उत्पीड़ित रहता स्वयं, आकुल है संताप।।
नेत्र निमीलित कर सके, बढ़ता सोच विकार।
सदा विचारे आप में, मिट जाये परिताप।।
परिजन की हर माँग से, नीचे दबता जाय।
मुखिया रत्नाकर रहे, किये डगर में पाप।।
राम नाम रसना मिली, कर लीन्ह्यो उद्धार।
संसृति में सबसे बड़ा, राम नाम को जाप।।

डॉ मीना कौशल

ग़ज़ल

इश्क में हासिल खज़ाने हो गये ।
ज़िन्दगी के दिन सुहाने हो गये ॥
वक़्त ने मसरूफ़ कुछ ऐसा किया ,
मुस्कराये अब ज़माने हो गये ॥
इश्क में तेरे ग़ज़ल ढलने लगी
हम भी ग़ज़लों में सयाने हो गये॥
प्यार का दम भर रहे थे जो कभी ,
आज वो गुज़रे फ़साने हो गये॥
वक़्त ने "ममता " यूँ बदली करवटें ,
प्यार के किस्से पुराने हो गये॥

डॉ ममता सिंह
मुरादाबाद

ग़ज़ल

उनकी जुल्फ़ो के पेचोख़म कब तक यूँ सुलझायें हम
दीवाने इस दिल की खातिर क्या-क्या बोझ उठायें हम

बैठ गया है फेर के नज़रें हरजाई इस आलम में
प्यार उमड़ता है जो दिल कैसे वो जतलायें हम

जैसे चाहो वैसे परखो तुम इस दिल की चाहत को
और कहो तो चीर के सीना तुमको आज दिखायें हम

हम जैसे दीवानो ने रख्खी है लाज मुहब्बत की
अहदे-वफ़ा की खातिर सारी दुनिया ही ठुकरायें हम

साक़ी तेरी शोख अदा से साग़र छलके जाते हैं
ऐसे आलम में बतलाओ कैसे उठकर जायें हम

उतरा है इतनी तेज़ी से ज़हर तुम्हारी बातों का
ऐसी बातों की कड़वाहट भूल के भी न भुलायें हम

फैली हैं झूठी ख़बरें हीं इतनी अपने बारे में
सच की पैरोकारी कर के किस-किस को समझायें हम

माना जुल्मत के साये ही फैले हैं साग़र हर सू
दुनिया को रोशन करने क्या घर को आग लगायें हम

विनय साग़र जायसवाल

अहदे-वफ़ा - वचन पालन , कौल निभाना
जुल्मत- अंधेरा
हर सू- हर दिशा

दुःख रुपी शिकारी

संसार के मायाजाल से
अछूते रह जाए हम!
यह इतना भी कहा सरल है!
यूं तो आंगन में चहचहाती
और झूमकर चलती
इन नन्हीं चिड़ियों को देखकर
मैं,
हर बार बेखबर हो जाती हूँ!
एक दीवार के सहारे खड़े
फूलों के पौधों
और उनपर लगे
ताजा फूलों को देखकर
मैं बेवजह मुस्कुरा देती हूँ!
जब तरह-तरह की
रंग-बिरंगे पंखों से सजी
तितलियों को
फूलों पर मंडराते देखती हूँ!
तो आत्मा तृप्त हो जाती है!
बहुत मुश्किल होता है,
उस वक्त ध्यान का भंग होना!
घर में लगे,
कृष्ण के चित्र तो कभी शिव के
चित्र!
सहज ही आकर्षित करते हैं!
किसी चीज को देखते-देखते
न जाने मैं
कब एक अनजान लोक के
अनजान पथ पर,
विचरण करने निकल पड़ती हूँ!
पता ही नहीं चलता!
इन सुकून और शांति के पलों से
खुद को बाहर निकालना जितना
मेरे लिए
मुश्किल होता है!
उनमें खो जाना उतना मुश्किल
नही होता!
परन्तु!
ज्योहीं मैं इनसे बाहर निकलती
हूँ!
ये संसार फिर से अपने
मायाजाल में फ़ास लेता है मुझे!
और फिर से मैं "दु:ख" रुपी
शिकारी का शिकार बन जाती
हूँ!

कृष्णलता (कृष्णा)
भीलवाड़ा (राजस्थान)
7665055166

स्त्री (भाग -1)

मैं लिखती हूँ जब कोई रचना..... देती हूँ अपना नाम
क्योंकि .... मैं एक कवि हूँ
मैं गढ़ती हूँ जब कोई चित्र..... देती हूँ अपना नाम
क्योंकि .... मैं एक चित्रकार हूँ

क्यों मगर दोस्तों...........???

पहले पिता का उपनाम फिर सात फेरे और ..... मिलता है पति का नाम
क्योंकि .... मैं स्त्री हूँ
सँवारती हूँ सजाती हूँ अपने घर को ..... दरवाज़े पर लिखती हूँ पति का नाम
क्योंकि .... मैं स्त्री हूँ
नौ माह पलती हूँ कोख़ में एक जान..... देती हूँ पिता का नाम
क्योंकि .... मैं स्त्री हूँ
हर क्षेत्र में अस्तित्व है मेरा फिर भी..... नहीं कोई मेरी अपनी पहचान
क्योंकि .... मैं स्त्री हूँ

स्त्री (भाग-2)

हाँ सच है जानी जाती हो तुम पिता के नाम से, मगर....
सबको पता है अपने पिता का "अभिमान" हो तुम
दरवाज़े की तख़्ती पर नाम है मेरा, मगर....
मेरे मन्दिर तुल्य घर की "शान" हो तुम

हाँ सच है बढ़ता है वंश मेरे ही नाम से, मगर....
इसी वंश में पल रहे "संस्कार" हो तुम
नहीं है तुम्हारी अपनी कोई पहचान, मगर....
जिसके बिना अधूरे हैं हम वो "आधार" हो तुम

स्त्री हो तुम......
स्त्री हो तुम......
स्त्री हो तुम......

शैफाली अग्रवाल
रुड़की उत्तराखण्ड

ग़ज़ल

2 1 2 2 1 2 1 2 2 2

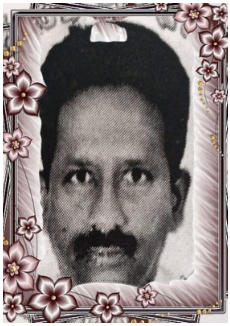

ज़िक्र उनका हमें सुनाने को,
लोग फिर आ गए सताने को।
हो गए रंज ग़म सभी हासिल,
और क्या रह गया है* पाने को।
चाहिए सबको* मुफ़्त की दौलत,
कोई* राज़ी नहीं कमाने को।
अंग होकर भी* तुम ज़माने का,
कह रहे हो बुरा ज़माने को।
मश्क़ करना बहुत ज़रूरी है,
शायरी में निखार लाने को।

ओंकार सिंह विवेक

* मात्रा पतन

परिचय

मेरी मुस्कानों को,
गैरों के आँसू स्वीकार।
क्योकि खुशियों पर नहीं,
गमों पर मेरा अधिकार।
मैं न कोई देवता,
न फ़रिश्ता हूँ यार।
महज़ एक इंसान,
इंसानियत से करता प्यार।

कामना

अंत न हो,
जिंदगी की खुशियों का,
मुस्कानों भरा,
ऐसा बसन्त चाहियें।
मैं सुशोभित कर सकूँ,
कान्हा को राधा संग।
हृदय के किसी कोने में,
प्रीति भरा उपवन चाहियें।

आनन्द वर्धन शर्मा

ग़ज़ल

कुछ कहा कीजिए कुछ सुना कीजिए|
अपने जख्म-ए-ज़िगर की दवा कीजिए|
है कठिन ही बहुत जिंदगी का सफर|
आप खुद ध्यान अपना रखा कीजिए|
ग़ैर से आप उम्मीद रखते हैं क्यूँ,
आप अपने लिए भी दुआ कीजिए|
अश्क यूँ ही बहाकर मिलेगा भी क्या,
दर्दे-दिल आप कुछ सह लिया कीजिए|
ज़ीस्त की राह मे ख़ार ही ख़ार हैं,
पांव अपने संभलकर धरा कीजिए|
हैं ये महफ़िल सजी गमज़दों के लिए,
आइऐ आप भी कुछ अता कीजिए|
नज्म कहिए या कहिए ग़ज़ल गीत अब,
आप भी हाले-दिल को बयां कीजिए|
जाइये पीजिए रोकता कौन है,
होश खोकर कहीं मत गिरा कीजिए|
बाद पीकर कदम लड़खड़ाएं नही,
ऐ मिरे दोस्त उतनी पिया कीजिए|
दर हक़ीक़त भी यह, है ज़रूरी बहुत,
उम्र के साथ क़द भी बड़ा कीजिए|
रख भी दीजे किताबे कहीं दूर अब
कुछ घड़ी आप खुद को पढ़ा कीजिए|

डॉ के पी सिंह 'विकलबहराइची'

समय

समय समय का फेर है,समय खेलता खेल।
बिना समय कुछ ना मिले, कैसा है ये मेल।।

समय बहुत बलवान है,समझ पड़त है नाहि।
करे समय पर काम जो, उसी साथ ये जाहि।।

समय साथ ही तुम चलो, पूरा हो सब काम।
मंजिल तक पहुँचे कदम, होवे जग में नाम।।

समय समय का खेल है, समय बहुत बलवान।
सही समय जो ले परख , बड़ा वही धनवान।।

समय बड़ा अनमोल है, कर इसका तू मोल ।
मोल वहीं है जानता, रखे इसे जो तोल।।

डॉ सरला सिंह स्निग्धा
दिल्ली

बड़ी देर में जाना हम हम नहीं मुसाफ़िर है
हम कुछ नहीं क़िस्मत के मुताबिक़ हैं
वरना चलते बेफिक्र से थे
खेलते झूमते मस्त थे
लड़ते झगड़ते मुस्कुराते आँख लड़ाते थे
रहते व्यस्त ज़िन्दगी मेंअफसाने से
मालुम पड़ा अब
न बस में समय न ख़ुद हम हैं
बस चल रहे चला रहा कोई हमें है
मिलेगी मंजिल जब तब जानेंगे
तभी मंज़िल और राह पहचानेगें

दीपक तिवारी

युवा

ओढ़ कर चादर बरफ की
हिमालय सा तन कर खड़ा है,
चैतन्य हो और लक्ष्य चुन कर
उसे साधने भी चल पड़ा है।
कुछ हुए है दिग्भ्रमित वो
विकृतियाँ मन में लिए रहे घूम,
युवा मेरे देश का सब सुधारने
को संकल्प ले चल पड़ा है।
हिमालय सा तन कर खड़ा है
लक्ष्य चुन साधने चल पड़ा है
आँधियाँ अब रोक सकती नहीं
प्रगति ही युवा का प्रण बड़ा है।
कुछ नया करने की चाह लिए
कुछ नया लिखने की चाह लिए
लीक से हट नया करने लगा
युवा दृढ़ बढ़ने की चाह लिए।

लाइलाज जख्म

जब मन न हो
तो कुछ न लिखें
और जब मन हो
तो भरपूर लिखें
मुक्त मन से लिखें
जी भर खिलखिलायें
ठहाके लगायें
निकलें घर से बाहर
लोगों से बतियायें
तन के जख्म
जो लाइलाज होने को
हैं अग्रसर उन्हें
खुली हवा में
इलाज योग्य बनायें
मन के जख्म
मन में ही पलते रह कर
लाइलाज जख्म बनें
इससे पहले ही उन पर
प्यार का मरहम लगा
लाइलाज होने से बचायें
माना तन/ मन
मोहल्ले/समाज/देश में
बहुत सी बुराइयाँ
नासूर बन रहीं हैं
सोचें कुछ उपाय
जो हमारे भीतर ही छिपे हैं
और हम अनजान हैं उनसे,
समय आत्ममंथन का है
समय इन चुनौतियों से लड़ने का है
समय गहन तिमिर में
आशा दीप जलाने का है
समय अपनी बुराइयों को
दूर हटाने का है
तो आओ चलें
मिलकर इन लाइलाज जख्मों का
हम इलाज बनें
इन चुनौतियों के सम्मुख तनें।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई
देहरादून, उत्तराखंड
9759252537

इतिहास के पन्नों पर ऐसा नहीं देखा हमने!
जो मंजर देख रहा हूं मंजर नहीं देखा हमने!
तुम्हें कैसे बताएं यह सब सुनो अये सनम!
सरे बाजार सब कुछ लुटता नहीं देखा हमने! 1
कहीं कोई किसी राह में खंजर लिए खडा है!
किसी दर पर कोई दरिन्दा राह रोके अडा है!
तुम्हें कैसे बताऊं क्या बीतती है इस दिल पर!
मेरा सीने में कोई देखे तो नश्तर सा अडा है! 2
कहां वह खो गयी दीवानगी लैला कैस जैसी!
जिन्दगी जी रहे है वे सभी यूं कैसी ऐश जैसी!
हमारे जिस्म के चीथडे करके वे डाले जब!
आह निकलती कलेजे से पीर होवे कैस जैसी! 3

डॉ बी. के. चन्द्रसखी
वैशाली गाजियाबाद।

झरोखा (मुक्तक)

इक झरोखा ऐसा बनायें , दिखे जिससे छवि न्यारी
सुन हवा आये कहीं से भी , आये शीतल - सी वो न्यारी
दृश्य हम देखें प्रकृति का ही , मन को भी तो वही भाये,
चलो रमते उन नज़ारों में , छवि लख झरोखे से सँवारी ।

दिखें हमें वो खिलती कलियाँ , ख़ुशबू फैलाती हैं जो सदा
झरोखे से ही झाँक लेना , किस्मत में जो है सुनो बदा
लेखन के द्वार हम खड़े हैं , लेने झरोखे से बुद्धि ,
बचपन , जवानी , बुढ़ापे तक , भाती झरोखे की ये अदा ।

रवि रश्मि 'अनुभूति '

गीत

एक जरा सी ठेस से टूटा नैनों में जो सपन पला।
नागफ़नी बदनाम हो गयी और सुमन ने हमें छला।

अधरों पर इतने कम्पन हैं मुहं से निकला बोल नहीं।
सोने चांदी की मंडी में दिल का कोई मोल नहीं।
लौह पुरुष था पर साँचों में जाने कितनी बार ढला।
नागफ़नी बदनाम हो गयी और सुमन ने हमें छला।

अपना चेहरा लगे पराया तो ये दर्पण झूठा है।
सूनी पूजा सूना मंदिर तो ये अर्पण झूठा है।
नहीं किसी ने फूल चढ़ाए और न कोई दिया जला।
नागफ़नी बदनाम हो गयी और सुमन ने हमें छला।

हमने जब जब किया भरोसा नैया के पतवारों पर।
हमको किस्मत लेकर पहुँची दूर कहीं मझधारों पर।
कभी किनारा हाथ न आया मांझी कितनी दूर चला।
नागफ़नी बदनाम हो गयी और सुमन ने हमें छला।

धरती से अम्बर तक पहरे कैसे मोती सीप मिले।
सूरज अनशन पर बैठा है कैसे कोई कमल खिले।
भवँरों की गुंजन सूनी है कौन सिखाये प्रेम कला।
नागफनी बदनाम हो गयी और सुमन ने हमे छला।

कमल सक्सेना
बरेली

शिव विवाह (दोहा श्रृंखला)

'भोले'की बारात में, बाजे ढोल मृदंग।
मस्ती में झूमें सभी,'महादेव' के संग।।

'महादेव' के संग में,पहुँची जब बारात।
देख सर्प दूल्हा गले, बेसुध 'मैना' मात।।

बेसुध 'मैना' मात का ,रंग हो गया स्याह।
ऐसे औघड़ नाथ से,बेटी मत कर ब्याह।।

बेटी मत कर ब्याह तू, बात हमारी मान।
महलों की रानी तुझे ,मिले नहीं सम्मान।।

बहुत मिले सम्मान माँ!यही लिखा है माथ।
मैया! तप करके मिला ,'त्रिपुरारी' का साथ।।

'त्रिपुरारी' के साथ में,फेरे लेकर सात।
ब्याह 'शक्ति' 'शिव' का हुआ, त्रयोदशी की रात।।

त्रयोदशी की रात को,औघड़ भोले नाथ।
'मैना' औ' 'गिरिराज' की,बेटी थामा हाथ।।

बेटी थामा हाथ फिर,ले आये कैलाश।
सन्यासी के भाग्य में,फैला पुंज प्रकाश।।

फैला पुंज प्रकाश तब,जगत हुआ खुशहाल।
'उमा' संग 'भूतेश' की, जोडी़ बनी कमाल।।

जोडी़ बनी कमाल ये,जाने सभी जहान।
दो काय एक प्राण हैं ,'भगवति' औ' 'भगवान'।।

रागिनी गर्ग
रामपुर (यू.पी.)

दीप शिखा

दीपशिखा सी जलती नारी
घर मे किया उजाला है ।
माँ बहन पत्नी और बेटी
बन रिश्तों को पाला है ।
तन मन अपना करे निछावर
करे समर्पण निजता का ।
करती सृष्टि का निर्माण यह
जीवन ही दे डाला है ।।

कितना कृतघ्न है मानव
अहसान नहीं माना है ।
नीच पतित पापी नर ने
केवल भोग्या जाना है ।
जीवन का आधार यही है
जाने दुनिया सारी है -
जान गई है नारी अब तो
हाथ नहीं कुछ आना है ।

मीरा भार्गव सुदर्शना

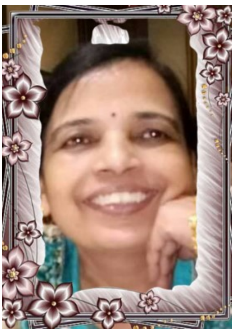

'आन ' समान्त पर (ग़ज़ल)

किसकी कितनी उड़ान होती है।
हौसलों से बयान होती है।

मुँह चुराती है उससे कड़वाहट,
जिसकी मीठी जुबान होती है।

हर नमाजी की वैसी बरकत है,
जिसकी जैसी अजान होती है।

तल्खियाँ दूर ही रखें दिल से,
इनसे दिल में थकान होती है ।

मन में जिनके अपार शीतलता ,
उनकी दुनिया महान होती है ।

डॉ0 राकेश सक्सेना

काव्यधारा

काव्यधारा के संस्थापक हैं
दिग्गज, जितेन्द्र-सुरेश ।
सन् 1994 से अब
जोड़ा हरैक प्रदेश ।।1।।
काव्यधारा का ध्वज केवल
फहराते गुरू जितेन्द्र।
हिन्दी के प्रचार-प्रसार हित
बन बैठे मानवेन्द्र ।।2।।
नये-नये कवियों को
प्रोत्साहित करते खूब ।
हर विधा में ऐसा करते
जैसे बढ़ती दूब ।।3।।
भारत का कोना-कोना
जाने रामपुर काव्यधारा ।
हाथ पकड़ जिसने भी देखा
फिर न किया किनारा ।।4।।
हिन्दी की सेवा हित जिसने
तन-मन-धन सब वार दिया।
कवियों ने भी उनको मन से
'गुरू जी' का सम्मान दिया।।5।।
सहयोगी भी सभी चले हैं
संग में सीना ताने ।
काव्यधारा की संगत में
नये बुनते ताने-बाने ।।6।।
चाहे बरेली-लालकुंआ
हल्द्वानी-नैनीताल ।
कवियों ने काव्य धारा की
ठोंक दी जमकर ताल ।।7।।
हरिद्वार या रुद्रपुर हो
कवियों ने गाये गीत ।
रामपुर भी लगता है सबको
उनके मन का मीत ।।8।।
काव्यधारा है ऐसी जैसे
कृष्णा जी से प्रीत ।
पीर निकाले सबके मन से
चले राष्ट्र की रीत ।।9।।
काव्यधारा से हम हैं- तुम हो
सबकी बनी सहारा ।
राष्ट्र धर्म अरु समाज का
हित ही ध्येय हमारा ।। 10।।
हिन्दी हिन्दुस्तान में रहकर
बने राष्ट्र की भाषा ।
राम किशोर के मन की क्या
काव्यधारा की अभिलाषा।।11।।

राम किशोर वर्मा
२००, न्यू कृष्णा विहार कालौनी,
गली नं० 3, ज्वाला नगर,
रामपुर-244901 (उ०प्र०)
चलित वार्ता-84331 08801

हमसफ़र

जीवन पथ लंबा होता
नहीं इसमें केवल राह सरल,
मिल जाती अमृत बूँद कभी
पीना पड़ता है कहीं गरल।

आतप का कहर बरसता है
चलती है कभी शीत लहर
वर्षा की तूफानी रातें
आता कभी बसन्त शहर।

छाती कभी घोर निराशा
कभी मिले आशा संबल
कभी चूमती कदम सफलता
मिल जाती कहीं राह विरल।

हमसफ़र साथ जब मिल जाता
जीने की आ जाती हिम्मत
उत्साहित हो संग में चलते
संबन्धों की बढ़ती कीमत।

पुष्पा शर्मा "कुसुम"

दोहा

लिया सहारा नाम का,
नित्य नवाऊँ माथ ।
भवसागर गहरा भँवर,
आय बचायें नाथ।।

पुष्पा शर्मा "कुसुम"

बावरा मन हुआ (गीत)

खो गये तुम न जाने,जहां में कहाँ,
ढूँढ़ते-ढूँढ़ते बावरा मन हुआ।

पास थे जब हमारे तो जाना नहीं,
मित्रवत् मीत को हमने माना नहीं।
शोक सन्ताप अत्यंत पल छिन हुआ,
ढूँढ़ते-ढूँढ़ते बावरा मन हुआ।

नींद आती नहीं अब हमें रात में,
पीर रह-रह के होती रही गात में।
इस तरह मित्र अनुभूत,निशदिन हुआ,
ढूँढ़ते-ढूँढ़ते बावरा मन हुआ।

लंबी होतीं प्रतीक्षा,की घड़ियाँ सदा,
हमको आशा मिलेगा,हुआ जो जुदा।
अब हमारे हृदय की तू धड़कन हुआ,
ढूँढ़ते-ढूँढ़ते बावरा मन हुआ।

तुमको चाहा है हमने सभी रूप में
हो तिमिर में तुम्हीं,गुनगुनी धूप में।
बंद पलकों से भी तेरा दर्शन हुआ,
ढूँढ़ते-ढूँढ़ते बावरा मन हुआ।

प्रीति शर्मा
रीवा (म०प्र०)

कहीं बिफरती देश की जनता
हाय -हाय कर रही है ।

कहीं बंदूकें अत्याचारियों पर
धांय- धांय कर रही हैं।

शीत लहर हर गली -गली में
सायं-सांय कर रही है।

राजनैतिक गलियारों में नेता
फांय-फांय कर रहे हैं।

कहीं भटकती युवा पीढ़ियाँ
कांय-कांय कर रही हैं।

दावानल सी फैली अफवाहें
दाँए-बाँए कर रही हैं

इक्कीसवीं सदी का सूरज
अब चमक कर ही रहेगा।

धराशायी होंगे वो खण्डर निश्चित
नवल भारत जब उगेगा।

शशि त्यागी
अमरोहा

मोदी है तो अच्छा है

भारत माता का रखवाला बनकर कोई आया
नरेन्द्र भाई मोदी जैसा नायक हमने पाया।।
सोचो समझो और विचारो मत आना बातों में
अपना देश सुरक्षित होगा मोदी के हाथों में
विश्व पटल पर अपना झंडा मोदी ने लहराया ।।
नरेन्द्र भाई मोदी जैसा......... ।।
उग्रवाद आतंकवाद ने अपने पाँव गड़ाये
छप्पन इंची सीने वाले मोदी बढ़कर आये
फ़ौलादी सीने के आगे उग्रवाद घबराया ।।
नरेन्द्र भाई मोदी जैसा............ ।।
जनता आज सुरक्षित मोदी जी के साथ खड़ी है
भारत के दुश्मन देशों की जान पे आन पड़ी है
पाकिस्तान भिखारी बनकर घुटनों चलकर आया ।।
नरेन्द्र भाई मोदी जैसा............ ।।
मोदी के मित्रों के मस्तक पर है टीका चन्दन
दुश्मन को भारत का सैनिक काफी है अभिनन्दन
सैनिक को अधिकार दिए सेना का शौर्य बढ़ाया ।।
नरेन्द्र भाई मोदी जैसा...........।।
मोदी है तो अच्छा है हम खड़े गर्व से तनकर
मोदी है तो अच्छा है वर्ना परिणाम भयंकर
स्वस्थ चिरायु हों मोदी जी 'सजग' हृदय में आया !!
नरेन्द्र भाई मोदी जैसा नायक हमने पाया !!

सत्य पाल सिंह 'सजग'
A-4 /159 सेन्चुरी पल्प एण्ड पेपर
लालकुआँ (नैनीताल) उत्तराखण्ड
पिन - 262402
सम्पर्क – 9412329561, 8171723018

बाल गीत

बच्चों का संसार निराला।
सीधा सादा भोला भाला।।
करते बच्चे हम नादानी।
मन मेरा गंगा का पानी।।
जैसे मधुबन में नंदलाला।
बच्चों का संसार निराला।।
सूबह शाम माँ लोरी गाती।
थपकी देती गीत सुनाती।।
बड़े नाज से माँ ने पाला।
बच्चों का संसार निराला।।
करेंगे पुरे माँ के सपने।
पथ प्रशस्त करेंगे अपने।।
जग में करें खूब उजाला।
बच्चों का संसार निराला।।
अंधियारा हम दुर करेंगे।
दीन जनों के कष्ट हरेंगें।।
पीयेंगे हम जग का हाला।
बच्चों का संसार निराला। ।
हम भारत के राज दुलारे।
नीलगगन के चांद सितारे।।
मातृभूमि का मैं मतवाला।
बच्चों का संसार निराला।।

उदय शंकर चौधरी नादान
कोलहंटा पटोरी दरभंगा
7738559421

जिंदगी

हमसे जिंदगी है
ज़िंदगी से हम नही ।
मिली है तो ये किसी
दुआ से कम नही ।

कभी ख्वाब दिखाती
ये मगरूर जिंदगी ।
कभी रूख़ पे घटा बनके
लहराती जिंदगी ।

कभी शामो-सहर बैठ कर
रोई ये जिंदगी।
कई चोट कर गई
दिल पे ये जिंदगी ।

फिर भी उम्मीद की लौ
रोज जगाए ये जिंदगी

सूरज की एक किरण सी
चमके ये जिंदगी ।

होंठों पे जो मुस्कान
थिरकती सदा मेरे ।
जिंदगी के सभी रंग
मिलेंगे यहां प्यारे

जिंदगी को संभालो
जरा प्यार से यारों ।
बड़ी मुश्किल से मिली है
नई धार दो यारों ।

ग़म और ख़ुशी का तो
संगम है जिंदगी ।
डुबकी लगाये जाओ
है ये प्यारी जिंदगी ।

सुलोचना परमार "उत्तरांचली"
7 प्रकाश विहार, धर्मपुर
देहरादून -248001, उत्तराखण्ड
मो0 न0 7457855051

वो दर्द

पन्नों में रखे हुए मेरे
लफ़्ज़ों को अब मिट जाने दो।
दर्द से बिखरी स्याही को
आँसुओं सा बिखरने दो ।
वो चीखी थी,चिल्लाई थी,
हर बार दुहाई देती थी,
बेदर्द इंसान उस बेटी को
कभी तो बेख़ौफ़ जीने दो।
रूह कांपी, तन उसका मर गया,
पैशाचिक कहर बनकर,
ज़िंदगी को उसकी लील गया,
उसे भी जीने का हक़ है,
कभी तो मासूम को जीने दो ।
जानवर से भी बदतर वो
कतरा कतरा कर गया !
ज़िन्दगी की अधूरी राह
कभी तो पूरा जीने दो..।
मनहूसियत के वीभत्स बीज,
वासना क्षयरोग क्यों बो रहे..!
बेटी की आजादी छीनने अमानुष,
कभी तो आजाद रहने दो ।
क्षुब्ध परिवार क्यूँ पिस रहे
उन्हें कचहरी में तौल रहे हो
आँखों की लोलुपता को,
कभी तो अपनी बेटी का दर्जा दो ।
अपने जिग़र के टुकड़े को देखो
बिटिया का जुर्म है क्या
किसी आँगन की किलकारी है वो
कभी तो खिलखिलाकर हँसने दो..।
जीने का तुम्हें अधिकार नहीं है
इस धरती पर बोझ हो तुम
स्वयं को पापी नष्ट करो..!
कभी तो निडर उसे जीने दो ।
बर्बरता का वो हर क्षण
जो प्रताड़ना बेटी झेल रही..थी
विद्रूपता के मलिन समाज में
कभी तो बिटिया को जीने का हक़
दो......!!

लक्ष्मी बड़शिलिया'बीना'
हल्द्वानी/नैनीताल – 263139
उत्तराखंड

जीवन संसार (दोहा)

सुख -दुख से परिपूर्ण है , यह जीवन संसार।
संयम सेवा धैर्य की , नौका से कर पार।।०१।।
धूप-छाँव वत जानिए , सुख-दुख का व्यवहार।
चार दिनों की जिंदगी , हँसकर मित्र गुजार।।०२।।
आदरणीया सुमनवत , रहकर भजो अनित्य।
शूलों में भी मुस्करा ,बनिये जग आदित्य।।०३।।
अतुलित बल के धाम जो , जिनके स्वामी राम।
उनको ध्याने से मिले , सर्व सुक्ख अविराम।।०४।।

अनिल कुमार शुक्ल 'अनिल'
दुर्गाप्रसाद ,बीसलपुर, पीलीभीत ,उत्तर प्रदेश
9719240320

बस आरती के साथ जहाँ पर अज़ान है
हाँ उस ज़मीं का नाम ही हिन्दोस्तान है।
हिन्दोस्तान जान के सजदा वहाँ करूँ
गीता के साथ-साथ जहाँ पर क़ुरान है।
सब हैं अलग मगर हैं बंधे एक डोर से
मिट्टी की अपनी सोच भी ऐसी महान है।
सोंधी सी इक हवा है फ़िज़ाओं में हर तरफ
मेरा नहीं ये मेरे बड़ों का बयान है।
महदूद सोच चाँद तलक है तुम्हारी पर
बाकी अभी तो और हमारी उड़ान है।
बस अम्न सिर्फ अम्न ही जिसका है फ़लसफ़ा
पाठक को ऐसे मुल्क पे होता गुमान है।

आनंद पाठक
बरेली (उत्तर प्रदेश)
09557606700, 07017654822

लाइलाज जख्म (नयी कविता)

जाने क्यों दे जाते हैं अपने ,
जख्मों पे जख्म ,,
न काम करती है दवा ,
और न हि मरहम ,,
सीने में हरपल,
धधकती रहती है ,,
आग सी ,
न जाने किस बात पर ,,
दे जाते हैं वो जख्म ,
खता हो न हो कोई ,,
लोग शौक भी रखते हैं ,
जख्म देने का ,,
जख्म भी ऐसे ,
जिनको समय भी ,,
भरने में अपनी ,
असमर्थता जता देता है ,,
जो हवा के हल्के ,
झोंके से फिर,,
ताजा हो जाते हैं ,
न ही जीने दें ,,
और न ही मरने दें ,
न ही चैन से रहने दें ,,
कम्बख्त है कि ,
सपनों में आकर भी ,,
अपनी याद दिला जाते हैं ,
और जख्मों को ,,
मरहम लगाने की बजाय ,
कुरेद जाते हैं ,,
जख्म भी हैं कि उनका ही ,
साथ देते हैं ,,
और फिर हरे हो जाते हैं ,
मानों जैसे उन्होंने भी ,,
कसम खा ली हो ,
लाइलाज होने की ।।

हरीश बिष्ट
रानीखेत ।। उत्तराखण्ड ।।

अलग अपना इक आसमां चाहता है
किसी को न वो दरमियाँ चाहता है

शजर छोड़कर उड़ गया है परिंदा
बसाना नया इक जहाँ चाहता है

नज़र क्यों उठाता है वो दूसरों पर
खुद अपना जो दमन निहां चाहता है

नहीं बेटियों की तमन्ना किसी को
मगर कहना हर कोई माँ चाहता है

कभी हमसे जितनी मुहब्बत उसे थी
वो उतना हमें अब कहाँ चाहता है

उसे ज़िन्दगी की खबर ही कहाँ है
न देना जो कुछ इम्तिहाँ चाहता है

हुआ अँधा बहरा सा मासूम का दिल
नहीं खोलना अब जुबां चाहता है

मोनिका 'मासूम'
मुरादाबाद

अंततः साबित हुआ अस्तित्व मेरे राम का,
फैसला आया वहीं मंदिर बनेगा राम का.
न्याय भी ऐसा हुआ जो सर्वजन संतुष्ट हैं,
पीठ का बस फैसला है, न्याय है श्री राम का.

श्री कृष्ण शुक्ल 'कृष्ण'
मुरादाबाद

प्रेम के वश हैं मगन

भावनाओं को समेटे
नेह की डोरी लपेटे
रंग में रंगते जहाँ के
हो गए खुद ही वहाँ के
धड़कनों में हो लगन
प्रेम के वश हो मगन ।

वक्त की दीवार ढहती
पर कभी ज़िल्लत न सहती
कर्म को ही धर्म माने
सत हृदय ही मर्म जाने ।
लक्ष्य भेदी हो गगन
प्रेम के वश हो मगन ।

फूल के संग शूल भी हो
फिर कभी न भूल भी हो
जिंदगी चलती रहेगी
उम्र भी ढलती रहेगी
ज्योति ज्वाला हो अगन
प्रेम के वश हो मगन ।।

छाया सक्सेना ' प्रभु '

ग़ज़ल

आग दिल में लगाए बैठे हैं
अपनी हस्ती जलाए बैठे हैं

फ़िक्र जिसको नहीं हमारी कुछ
उसको अपना बनाए बैठे हैं

उनसे जाकर ये कैसे मैं कह दूँ
मेरी नींदे चुराये बैठे हैं

एरो गैरों को मुंह लगाकर ही
ख़ुद मुसीबत में आए बैठे हैं

जिनको गलियों में भी सुना न गया
वो भी महफिल सजाए बैठे हैं

जाम छलके हैं आँख से मुक्ता
मैकदा हम छुपाए बैठे हैं

डॉक्टर शालिनी शर्मा मुक्ता
शिव शक्ति स्टेट प्रेम नगर बरेली
मोबाइल 99273 82108

चिड़िया की आंख को तो रहेंगे ही भेद के,
अर्जुन के उन अचूक से तीरों सी ज़िन्दगी।
शैली सिंह

नहीं हूँ अब मुकद्दर में मैं उसके,
तरस उस बेवफ़ा पे आ रहा है।
शैली सिंह

निज मन - अधरों की मधुर वाणी,
पर मन के नयन भी जान सकें।
निज मन के विचलित पथ पर पग,
पर - वाक् - मौन भी मान सकें।

पर - ज्ञान - भाष पर नतमस्तक,
निज मन का सहज समर्पण हो,
पर - मधु संवादों पर निज मन,
का अमर- अतुल आकर्षण हो,

जब श्वेत पड़े मन - रुधिर राशि,
पर मन निज पीड़ा भान सके।
निज मन अधरों की मधुर वाणी,
पर मन के नया भी जान सकें।

समीक्षा "एक प्रारम्भ"

वाणी में "माधुर्य नहीं,
नयनों में "अभिमान",
"मानवता" का अंश नहीं,
फिर जीवन मृत्यु समाज.

समीक्षा "एक प्रारम्भ"

तीखे तीखे अर्क से, अंसुअन भीजे गाल
बड़ा कीमतें आपनी, इतराता है प्याज़
मगरुरी अच्छी नहीं, सुन! रे ज़िद्दी प्याज़
तेरे बिन भी स्वाद है, झूठा तेरा राज

राजबाला "धैर्य"

समीक्षा

पुस्तक- प्रणाम काव्यधारा
प्रधान संपादक- जितेंद्र कमल आनंद
प्रकाशक- ओशन पब्लिकेशन, रामपुर (उ. प्र.)

रचनाकार- रागिनी गर्ग जी

साझा संकलन, प्रणाम काव्यधारा में पेज न- 58,59 में प्रकाशित आदरणीय रागिनी गर्ग जी की तीनों रचनाएँ उत्कृष्ट कोटि की हैं । पहली रचना- मुझे उसने रुलाया शीर्षक से विरह गीत है।
वियोग श्रृंगार, करुण रस से भरपूर भाव व शब्दों का संयोजन उनकी विशिष्ट शैली को दर्शाता है। बहुत ये मन दुखाया है मुखड़े पर आधारित रचना का अंतरा देखें जिसमें विरह उत्कर्ष पर है-
लगे हर रात नागन सी नहीं लगती सुहागन सी
अकेले जी नहीं पाऊँ दुखों में डूब मर जाऊँ ।

दूसरी रचना राष्ट्रभक्ति पर आधारित गीत है- जिसका शीर्षक नाम अपना वो करेगा।
देश हित वो भी लड़ी हैं
चूड़ियाँ तज वेग पकड़ीं गर्दनें अरि की जकड़ीं
मृत्यु को जो भी वरेगा नाम अपना वो करेगा ।
अदम्य साहस व जोश भरती हुयी पंक्तियाँ पूरे गीत का प्राण हैं । आज ऐसी ही प्रेरक रचनाओं की आवश्यकता समाज को है ।

तीसरी रचना भक्ति गीत है - पूरण कर दो सारे काज
लेकर आओ माता अपना शेर
हर लो पापों को क्यों करती देर ।
भक्ति भाव से ओतप्रोत यह गीत बड़ी सहजता से भक्त और भगवान के बीच का सुंदर भावनात्मक सम्बंध है ।

आप ऐसे ही अच्छे अच्छे गीत रचती रहें इन्हीं शुभकामनाओं के साथ आपको हार्दिक बधाई ।

रचनाकार- पुष्पा जोशी प्राकाम्य जी

साझा संकलन, प्रणाम काव्यधारा में पेज न.- 23, 24, 25 में प्रकाशित आदरणीय पुष्पा जोशी प्राकाम्य जी की तीनों रचनाएँ उत्तम कोटि की हैं। पहली रचना- दुआएँ शीर्षक से

गीत है । दुआ और माता - पिता दोनों ही आपस में पूरक कहे जा सकते हैं, इसी भाव को आपने अपनी रचना में खूबसूरती से संजोया है। कुछ पंक्तियाँ देखिए-

नजर के सामने हमको जो पल पल देखना चाहें
बिछड़ कर हमसे इक पल भी कभी जीना नहीं चाहें
कि उनकी धड़कनें भी सिर्फ हमीं से ही धड़कती हैं
हजारों मुश्किलों में भी असर भरपूर रखतीं हैं ।

भावप्रद ,सुंदर गीत एक सशक्त लेखनी द्वारा ही रचे जा सकते हैं ।

दूसरी रचना रामकृष्ण परमहंस पर आधारित गीत है - इस रचना में आपने रामकृष्ण परमहंस जी की पूरी जीवन गाथा व कर्मक्षेत्र को बहुत सुंदर शब्दावली में पिरोया है । कुछ पंक्तियाँ देखिए-

परमब्रह्म एक ही है धर्म हैं अनेक
किन्तु सभी धर्मों के मूल में विवेक
पहुँचाते सब ही परमात्मा के धाम
गुरु विवेकानंद जी के शत शत प्रणाम ।

आपकी इस रचना से गुरु शिष्य का सम्बंध भी और दृढ़ हुआ है । दोनों एक दूसरे की पहचान हैं जब भी एक का नाम आता है तो दूसरे का चित्र स्वाभाविक रूप से आँखों के सम्मुख आ जाता है । श्रेष्ठ गुरु और शिष्य का बेहतर उदाहरण हैं ये दोनों महापुरुष।
ऐसी प्रेरणादायक, जोश भरती हुयी रचनाओं की आज महती आवश्यकता है ।

तीसरी रचना प्रेरक गीत है - सपना पटेल का
प्रथम गृह मंत्री लोह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल को कौन नहीं जानता , आपने रियासतों का एकीकरण करके देश निर्माण में अमूल्य योगदान दिया है ।

अब घाटी में भी गूंजेंगे वन्देमातरम जन गण मन
स्वतन्त्रता के पावन दिन का आज मिल गया हमें शगुन ।

इन पंक्तियों में राष्ट्रभक्ति भाव की झलक दिखायी देती है । सरदार पटेल का सपना धारा 370 की समाप्ति के साथ पूरा होता दिख रहा इस भाव को बहुत ही उम्दा ढंग से शब्दबद्ध किया है।

आप ऐसे ही अच्छे- अच्छे भावप्रद, देशभक्ति से पूर्ण प्रेरक गीत रचती रहें इन्हीं शुभकामनाओं के साथ आपको हार्दिक बधाई ।

समीक्षक
छाया सक्सेना प्रभु
जबलपुर (म. प्र.)
मो. - 7024285788

अखिल भारतीय काव्यधारा के रचनाकारों के छायाचित्र

जितेन्द्र कमल आनंद

पुष्पा जोशी प्राकाम्य

राम किशोर वर्मा

डॉ शालिनी शर्मा मुक्ता

रागिनी गर्ग

छाया सक्सेना प्रभु

सुबोध शर्मा शेरकोटी

डॉ अरविन्द धवल

डॉ शेषपाल सिंह शेष

डॉ ममता सिंह

विनय सागर जायसवाल

कृष्णलता कृष्णा

शैफाली अग्रवाल

ओंकार सिंह विवेक

आनंद वर्धन शर्मा

बिकल बहराईची

डॉ सरला सिंह स्निग्धा

दीपक तिवारी

डॉ भारती वर्मा बौड़ाई

डॉ बी के चन्द्रसखी

रवि रश्मि अनुभूति

कमल सक्सेना

मीरा भार्गव सुदर्शना

डॉ राकेश सक्सेना

पुष्पा शर्मा कुसुम

प्रीति शर्मा

शशि त्यागी

सत्यपाल सिंह सजग

उदय शंकर चौधरी नादान

सुलोचना परमार उत्तरांचली

लक्ष्मी बड़शिलिया बीना

अनिल कुमार शुक्ल

आनंद पाठक

हरीश बिष्ट

मोनिका मासूम

श्री कृष्ण शुक्ल कृष्ण

समीक्षा एक प्रारम्भ

शैली सिंह

राजबाला धैर्य

डॉ मीना कौशल

आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा

मंगल भवन, साईं मंदिर के पास

साईं विहार कॉलोनी,

रामपुर - 244901, उत्तर प्रदेश

📞 7017711018

आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा

मंगल भवन, साईं मंदिर के पास
साईं विहार कॉलोनी,
रामपुर - 244901, उत्तर प्रदेश
📞 7017711018